किसानों को भा रही धान की डायरेक्ट सीडिंग

पंजाब में भूमिगत जलस्तर में लगातार गिरावट से बढ़ा धान की डायरेक्ट सीडिंग का रकबा

अभिषेक श्रीवास्तव • लुधियाना

पटियाला के गांव मौलवीवाला के किसान सरबजीत सिंह डायरेक्ट सीडिंग तकनीक से तैयार धान के खेत में।

कैसे हुआ बदलाव

वर्ष 2006 में जहां पंजाब में धान की डायरेक्ट सीडिंग का रकबा मात्र 20 एकड़ था, वहीं वर्ष 2011 में इसका रकबा बढ़कर 8,900 एकड़ हो गया है। यह सब हुआ है पेप्सिको इंडिया के सहयोग से।

पंजाब में लगातार गिरते भूमिगत जलस्तर के कारण धान की पैदावार करना किसानों के लिए मुश्किल हो रहा है। ऐसे में धान की डायरेक्ट सीडिंग किसानों के लिए फायदे का सौदा साबित हो रही है। वर्ष 2006 में जहां पंजाब में धान की डायरेक्ट सीडिंग का रकबा मात्र 20 एकड़ था, वहीं वर्ष 2011 में इसका रकबा बढ़कर 8,900 एकड़ हो गया है। यह सब हुआ है पेप्सिको इंडिया के सहयोग से। पेप्सिको इंडिया द्वारा चलाए जा रहे पर्यावरण स्थिरता कार्यक्रम के तहत पंजाब में किसानों को जल संरक्षण का संदेश देने के साथ उन्हें धान की डायरेक्ट सीडिंग के लिए भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

पटियाला के मौलवीवाला गांव में भूमिगत जलस्तर 110 फुट नीचे चला गया, जो कि दो-तीन वर्ष पहले 70-80 फुट हुआ करता था। यहां के किसान सरबजीत सिंह के मुताबिक उनके पास 90 एकड़ जमीन है, जिसमें उन्होंने 50 एकड़ जमीन में डायरेक्ट सीडिंग तकनीक से धान की 1121 व पूसा किस्म लगाई है। उन्होंने वर्ष 2010 में पहली बार 18 एकड़ में पेप्सिको इंडिया के सहयोग से डायरेक्ट सीडिंग के जरिए धान की पैदावार की थी। सरबजीत के मुताबिक इस तकनीक की वजह से जहां एक ओर ज्यादा पानी की जरूरत से छुटकारा मिला वहीं पैदावार भी बढ़ गई। सरबजीत के मुताबिक पारंपरिक धान की खेती में पहले खेत को कद्दू करना पड़ता है, फिर पानी भरकर नर्सरी लगानी होती है। जब पौधा बड़ा हो जाता है तो फिर पूरे खेत में पानी भरकर रोपाई करनी होती है और फसल तैयार होने तक खेतों में एक से डेढ़ इंच पानी भरकर रखना होता है। इसकी तुलना में डायरेक्ट सीडिंग में केवल खेत की लेजर लेवलिंग कर डायरेक्ट सीडिंग मशीन की मदद से खेतों में बीज रोपा जाता है। इसमें खेत में हमेशा पानी भरने की जरूरत नहीं होती, बस नमी बनाए रखने के लिए हर सात दिन में पानी डालना होता है। सरबजीत के मुताबिक पारंपरिक तरीके में जहां किसानों को खेत में रोज पानी देना होता है, वहीं डायरेक्ट सीडिंग में इसकी जरूरत नहीं पड़ती। इससे किसानों को पानी की चिंता से निजात मिली है। दूसरे किसान काबुल सिंह ने बताया कि उन्होंने भी सरबजीत सिंह से प्रेरित हो इस वर्ष पहली बार आठ एकड़ में डायरेक्ट सीडिंग तकनीक के जरिए धान की पैदावार की है।

फरीदकोट में सिबियां गांव के किसान लखवीर सिंह ने डायरेक्ट सीडिंग के जरिए वर्ष 2010 में चार एकड़ में पीआर 118 की पैदावार की थी। लखवीर के मुताबिक डायरेक्ट सीडिंग से प्रति एकड़ उन्हें 32 क्विंटल पैदावार मिली, जबकि पारंपरिक तरीके से 30 क्विंटल प्रति एकड़ की ही पैदावार हुई। पानी की काफी बचत और पैदावार भी अधिक होने के कारण लखवीर ने इस साल अपनी पूरी 14 एकड़ में डायरेक्ट सीडिंग तकनीक से धान की खेती की है। इसके लिए लखवीर ने पेप्सिको द्वारा डिजाइन की गई मशीन भी 55 हजार रुपये में बनवा ली है। पेप्सिको इंडिया के जनरल मैनेजर (एग्रीकल्चर रिसर्च) डा. सुशील सांख्यान के मुताबिक सिंचाई दक्षता के माध्यम से जल संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए पंजाब में वर्ष 2004-05 में पहली बार धान की डायरेक्ट सीडिंग की शुरुआत की गई। इसके लिए पेप्सिको की एग्रीकल्चर रिसर्च टीम ने कई प्रयोग किए और डायरेक्ट सीडिंग के लिए पैडी डायरेक्ट सीडिंग मशीन का निर्माण भी किया, जो किसानों को उपयोग के लिए मुफ्त में उपलब्ध कराई गई है। डा. सांख्यान का दावा है कि धान की डायरेक्ट सीडिंग के जरिए पारंपिकर तरीके से की गई धान की खेती की तुलना में 30 फीसदी पानी की बचत होती है।

पंजाब में बढ़ता डायरेक्ट सीडिंग रकबा

वर्ष	डायरेक्ट सीडिंग का रकबा
2006	20 एकड़
2007	120 एकड़
2008	481 एकड़
2009	4500 एकड़
2010	6500 एकड़
2011	8900 एकड़